The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 2 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

जिद्दू कृष्णमूर्ति की समग्र जीवन दृष्टि एवं वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रासंगिकता

शैलेंद्र कुमार सिंह[1] , डॉ. दुर्गेश पाल [2]

[1] शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

[2] सहायक आचार्य, शिक्षा शास्त्र विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18976192

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-02-2026

Published: 10-03-2026

Keywords:

जे0 कृष्णमूर्ति, दार्शनिक एवं शैक्षिक चिंतन, मानवतावाद, विश्वशांति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)

ABSTRACT

जिद्दू कृष्णमूर्ति एक प्रख्यात दार्शनिक, बौद्धिक विचारक, लेखक, शिक्षाविद और आध्यात्मिक विषयों के लोकप्रिय चिंतक थे। जे0 कृष्णमूर्ति ने स्वयं को मानवतावादी शिक्षक के रूप में घोषित किया है। उन्होंने अज्ञानता, भय, भ्रम, और अंधविश्वास से मुक्ति हेतु शिक्षा को महत्वपूर्ण साधन माना है। जे0 कृ ष्णमूर्ति के मौलिक दर्शन ने सभी को अपनी ओर आकर्षित किया है। उन्होंने मानवतावाद को आधार मानकर मानव के कल्याण पर बल दिया। उनके अनुसार वास्तविक दर्शन वह है जो हमारे जीवन में सत्य के लिए प्रेम जागृत करता है। उनके अनुसार वाह्य और आंतरिक जगत में होने वाला प्रत्येक स्पंदन का प्रतिक्षण बोध होना ही दर्शन है। उनकी विचारधारा आत्मनिरीक्षण, मनोवैज्ञानिक स्वतंत्रता, सत्य की खोज पर आधारित थी। उन्होंने शिक्षा को केवल सूचनाओं का संचरण का माध्यम नहीं माना बल्कि उसे जीवन की गहरी समझ और व्यक्तिगत जागरूकता विकसित करने का साधन माना। उनका विचार था कि हमें ऐसे समाज का निर्माण करना चाहिए जो समाज में सादगी, प्रेम सहयोग की भावना विकसित करें। जे0 कृष्णमूर्ति ने धर्म आध्यात्म, दर्शन, मनोविज्ञान और शिक्षा को अपने अंतर्दृष्टि के माध्यम से नए आयाम प्रदान किए हैं। जे0 कृष्णमूर्ति के जीवन का एकमात्र उद्देश्य विश्व को शांति, सुसंस्कृत तथा मानवतावादी दृष्टिकोण की संपूर्णता का बोध कराना था। उनका मत था कि यदि व्यक्ति अपने अंदर करुणा, सहअस्तित्व और प्रेम विकसित करे तो विश्व शांति सम्भव हो सकती है। जे0 कृष्णमूर्ति ने शिक्षा को मानवतावाद और विश्व शांति के लिए महत्वपूर्ण साधन माना है। जे0 कृष्णमूर्ति ने जिस तरह

लोगों का आत्म साक्षात्कार की ओर प्रेरित करने का काम किया। वह उन्हें बीते सदी का अनोखा दार्शनिक बनाता है। उनकी समग्र जीवन दृष्टि, उनका दर्शन, शिक्षा तथा मानवतावादी दृष्टिकोण, विश्वशांति के सन्दर्भ में उनका विचार भारत ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है।

प्रस्तावना :

जे0 कृष्णमूर्ति एक प्रसिद्ध दार्शनिक, शिक्षाविद और आध्यात्मिक शिक्षक थे। इनका जन्म 12 मई, 1895 ई. में तमिलनाडु के मदन पल्ली नामक ग्राम में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता जिद्दू नरायनिया एक थियोफिस्ट एवं ब्रिटिश प्रशासन में कर्मचारी थे। जे0 कृष्णमूर्ति थियोफिसिकल सोसाइटी के सदस्य रहे। उनके विचारों में पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के प्रति नूतन दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। श्रीमती एनी बेसेंट ने जे0 कृष्णमूर्ति के बारे में महत्वपूर्ण टिप्पणी की थी कि ''जे0 कृष्णमूर्ति विश्व शिक्षक के वाहक होंगे''। वर्तमान समय में मूल्यों में परिवर्तन दृष्टि गोचर हो रहा है। इसलिए मानवतावादी दृष्टिकोण आवश्यक हो गया है। 1928 में उन्होंने जे0 कृष्णमूर्ति फाउंडेशन की स्थापना की। उन्होंने ऑर्डर ऑफस्टार इन द ईस्ट की भी स्थापना की एवं इसके प्रमुख रहे। उन्हें न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र संघ में बोलने के लिए 04 फरवरी, 1986 को आमंत्रित किया गया। जे0 कृष्णमूर्ति का समग्र जीवन, सत्य, आत्मबोध, मुक्ति, मानव सृजन और कल्याण के लिए समर्पित रहा। उनकी समग्र जीवन दृष्टि वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिक, प्रायोगिक, सार्थक, महत्वपूर्ण और उपादेय है। 17 मई, 1986 को उनका देहावसान हो गया।

दार्शनिक चिंतन :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार ''दर्शन जीवन एवं प्रज्ञा'' के लिए प्रेम जागृत करता है। दर्शन व्यक्ति को उसके वास्तविक स्वरूप का बोध करता है। बाह्य और आंतरिक जगत में होने वाला प्रत्येक स्पंदन का प्रशिक्षण बोध होना ही वास्तविक दर्शन है। जे0 कृष्णमूर्ति संवेदनशीलता, स्वतंत्रता, विवेक एवं प्रज्ञा से प्रेरित कर्म को स्वीकार करते हैं। सत्यान्वेषण और आत्म अनुसंधान ही जीवन का लक्ष्य निर्धारित करते हैं, न कि मोक्ष की।

तत्व मीमांसा :

जे0 कृष्णमूर्ति का व्यक्तित्व परमात्मा की सत्ता को मानता है। उनका मत है कि उस अनुभूति को विचारों द्वारा संपादित नहीं किया जा सकता। जे0 कृष्णमूर्ति का मानना है कि ईश्वर असीम अनंत है। ईश्वर को मंदिर में कैद नहीं किया जा सकता। वास्तविक रूप से ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है। जे0 कृष्णमूर्ति का दर्शन सभी प्रकार की मान्यताओं से ऊपर उठकर वस्तु के वास्तविक स्वरूप को देखने के लिए प्रेरित करता है। उनका दर्शन यथार्थवादी दृष्टिकोण पर आधारित है। धर्म परम शांति की अवस्था है। जिसमें सत्यता है, वही परमात्मा है। जे0 कृष्णमूर्ति का एकमात्र उद्देश्य यह है कि कैसे मनुष्यता से मुक्त होकर शाश्वत आनंद में मग्न हो जाए। जहाँ पर किसी प्रकार का दुख और चिंता का बोध न हो।

आत्मा सम्बन्धी विचार :

जे0 कृष्णमूर्ति का आत्मा के सम्बन्ध में विचार भारतीय दर्शन के आत्मा सम्बन्धी विचार से भिन्न है। उनका मानना यह था कि सामान्यतया जिसे मनुष्य आत्मा के रूप में जानता है। वह अहंकार के रूप में होता है। आत्मा मनुष्य की सभ्यता, संस्कृति एवं आकांक्षा का परिणाम है। आत्मा के बारे में विश्व में ऐसा विचार बन गया है। वह इस भौतिक शरीर जो नाशवान है, इससे अलग कोई अमृत तत्व नहीं है। जो व्यापक और अमर है। जे0 कृष्णमूर्ति के विचार में 'आत्मा एक विचार' है।

ज्ञान मीमांसा :

मानव में चिंतन एवं मनन होने की क्षमता उन्हें अन्य प्राणियों से अलग और श्रेष्ठ बनाती है। अपनी वैचारिक क्षमता से ही व्यक्ति महत्वपूर्ण सिद्धांत का प्रतिपादन करने में सक्षम है। यह ज्ञान वैचारिक क्षमता का परिणाम है। अनुभव संग्रहण का नाम ही ज्ञान है। ज्ञान के तीन स्वरूप हैं।

1. वैज्ञानिक ज्ञान – क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित ज्ञान को वैज्ञानिक ज्ञान कहते हैं। वैज्ञानिक ज्ञान में गणितीय, ऐतिहासिक और भाषा शास्त्री ज्ञान की प्रमुखता है। यह सभी विषय के ज्ञान सूचनाओं एवं तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर होता है।
2. सामूहिक ज्ञान – इस प्रकार का ज्ञान परंपरागत ज्ञान पर आधारित होता है। यह ज्ञान अपने अनुभव से पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होता है। यह ज्ञान सामूहिक प्रकृति से होता है।
3. व्यक्तिगत ज्ञान – सृजनात्मक ज्ञान व्यक्ति के व्यक्तिगत ज्ञान पर आधारित होता है। संवेदनशीलता और ज्ञान के अभाव में किसी वस्तु का स्पष्ट बोध नहीं होता है। वास्तविक ज्ञान सत्ता का प्रतीक होता है।

सत्य :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार 'सत्य एक पथहीन भूमि' है। सत्य तक पहुंचने के लिए कोई राजमार्ग नहीं। सत्य तो स्वयं के भीतर है।

दुखः और दुख का भोग :

जे0 कृष्णमूति के अनुसार भूत और भविष्य की स्मृति दुख का कारण है। कष्ट का सम्बन्ध शरीर से है जबकि दुख मानसिक पीड़ा है। शारीरिक पीड़ा का अंत औषधि के सेवन से दिया जा सकता है। लेकिन मानसिक पीड़ा को दूर करने के लिए व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक स्थितियों को पूरी तरह से जानना होता है।

भय :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार भय मानव मन की गंभीर स्थिति है। भय का कारण जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली प्रतियोगिताएं एवं अनिश्चितताएं होती हैं। आत्मज्ञान होने पर ही भय से मुक्ति मिलती है।

मृत्यु :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार मृत्यु से इंसान भयभीत होता है। हमें यह पता नहीं कि जीने का अर्थ क्या है। मृत्यु दो प्रकार की होती है। शरीर की मृत्यु और मन की मृत्यु। शारीरिक मृत्यु एक अनिवार्य घटना है। मन की मृत्यु ही वास्तविक मृत्यु है।

बुद्धि :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार जब हम संवेदनशीलता और चुनाव रहित सलंग्नता से किसी घटना की संपूर्णता को देखते हैं तो वह अवलोकन प्रत्यक्ष ज्ञान है। इसे ही जे0 कृष्णमूर्ति ने प्रज्ञा माना है। प्रज्ञा के कारण ही हम पृथ्वी के सौंदर्य एवं प्रकृति के सौन्दर्य का अवलोकन कर सकते हैं।

ध्यान :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार ध्यान का अर्थ विचार का अंत होना है। जबकि ध्यान, साधन और साध्य दोनों हैं। ध्यान मन की अवस्था है, जिसमें मन प्रत्येक जीव को पूर्ण होने के साथ समग्रता पूर्वक देखता है। ध्यान मन की भ्रांतिओ से दूर सत्य और परमानंद की अवस्था में है।

युद्ध और हिंसा :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार युद्ध एवं हिंसा मानव के लिए खतरा है। इसका प्रादुर्भाव राष्ट्रवाद की प्रेरणा से होता है।

प्रेम :

जे0 कृष्णमूर्ति का विचार है कि प्रेम एक विश्वसनीय वस्तु है। प्रेम में वासना, घृणा आदि किसी का भेदभाव नहीं होता है।

स्वतंत्रता :

जे0 कृष्णमूर्ति के विचार से चिंतन एवं मनन की अवस्था स्वतंत्रता की अवस्था का द्योतक है।

मूल्य मीमांसा :

जे0 कृष्णमूर्ति के विचार सर्व जगत के लिए कल्याणकारी हैं। उन्होंने संपूर्ण विश्व की मानवीय समस्याओं का अनुभव किया। उनका विचार था कि मनुष्य भौतिक साधन से संपन्न होने पर सुखी नहीं है। वह तृष्णा, द्वेष के बोझ से दबा है। उन्होंने बाह्य एवं आंतरिक विकास को महत्व दिया। उनका मत था कि समाज ऐसा होना चाहिए, जिसमें सादगी, प्रेम, तुष्टि और सहयोग की भावना हो। सामाजिक आधार पर स्तरीकरण होने के बावजूद सभी प्रेम और सहयोग की भावना से एकजुट हों। संपूर्ण मानवता का एक लक्ष्य है, मुक्ति और आनंद की प्राप्ति।

जे0 कृष्णमूर्ति का शैक्षिक चिंतन :

शिक्षा :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा एकमात्र कौशल प्राप्त करना नहीं है बल्कि मानव को महान कला के साथ जीने के लिए शिक्षित करना है। शिक्षा का अर्थ मन के ज्ञान से है, जो आत्मज्ञान सत्य की खोज, समन्वित, सम्यक दृष्टिकोण को जागृत करना एवं कार्य को संपूर्ण मन, हृदय और प्रेम से करना है। मनुष्य को स्वयं को पहचानना, धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझना है। जे0 कृष्णमूर्ति ने 'लाइफ अहेड' में कहा है कि सम्यक शिक्षा और सम्यक विकास में सीखना सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। उन्होंने सीखने के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है कि सीखने का तात्पर्य केवल जानकारी संग्रह करना नहीं बल्कि गहन समझ होना है। जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार 'अन्तः मन का ज्ञान' ही शिक्षा है।

शिक्षा के उद्देश्य :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य एक संतुलित मानव का विकास करना है जो चेतनायुक्त, सद्भावना से परिपूर्ण एवं वैज्ञानिक बुद्धि तथा आध्यात्मिकता में समन्वय स्थापित करने में सामर्थ्य रखता हो। शिक्षा सबसे पहले अपने मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को समझने में सहायक हो। जे0 कृष्णमूर्ति कहते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य बालक को संवेदनशील बनाना है। इसके अनुसार बालकों में प्रकृति और मानव प्रकृति से प्रेम को स्थापित करना है। संवेदनशीलता में घृणा, द्वेष, क्रोध का कोई स्थान नहीं है।

शिक्षा के उद्देश्य निम्नवत् हैं–

शारीरिक विकास :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार स्वस्थ शरीर के लिए स्वस्थ मन का होना आवश्यक है। जे0 कृष्णमूर्ति के विचार में शारीरिक विकास का मुख्य उद्देश्य केवल शरीर को मजबूत करना नही है बल्कि मानसिक और भावात्मक स्थिरता प्राप्त करना है। शारीरिक विकास केवल शारीरिक रुप से स्वस्थ्य रखने का माध्यम नहीं है। शारीरिक विकास मानसिक और आत्मिक विकास का साधन है।

मानसिक विकास :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य बालक को दिए जाने वाले विभिन्न ज्ञान के साथ–साथ अपने मन को परंपराओं के बोझ से स्वतंत्र करना है, जिससे नवाचार, अनुसंधान करने में सक्षम हो सके।

सामाजिक विकास :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है। व्यक्ति का विकास समाज में होता है और वह सभी आवश्यकताओं की पूर्ति समाज में रहकर करता है। समाज का उत्तरदायित्व निर्वहन करना प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है।

सांस्कृतिक विकास :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक मानव में मानवीय गुणों का विकास करना है। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य में ऐसी अन्तः शक्ति और चेतन की वृद्धि करना है, जिससे वह पूर्वाग्रहों और पूर्व धारणाओं के विपरीत दृढ़ता पूर्वक खड़ा हो सके। नवीन मूल्यों एवं नवीन संस्कृति का निर्माण कर एकीकृत मानव का विकास कर सके।

आध्यात्मिक मूल्यों का विकास :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार आध्यात्मिक मूल्यों के विकास से तात्पर्य परमात्मिक मूल्यों के विकास से है। नैतिक मूल्यों के विकास के द्वारा ही आध्यात्मिक मूल्यों का विकास सम्भव है। इनकी प्राप्ति के लिए आन्तरिक स्वतंत्रता, आंतरिक शांति, आत्मानुशासन, धैर्य एवं ज्ञान को अनिवार्य मानते हैं। जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार आध्यात्मिकता का वास्तविक मूल्य व्यक्तिगत रुप से आत्मज्ञान और आन्तरिक क्रान्ति में निहित है। उनका मानना था कि जब व्यक्ति अपने भीतर के सत्य को पहचानता है, तभी वह वास्तविक आध्यात्मिक मूल्यों को महसूस कर सकता है।

चारित्रिक विकास :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार असत्य को त्याग कर सत्य को अपनाना ही चरित्र निर्माण है। चरित्रवान व्यक्ति का जीवन स्वयं में ही एक आनन्द होता है।

वैज्ञानिक बुद्धि का विकास :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार विश्व में विज्ञान एवं तकनीकी का विकास हो रहा है। नवीन अनुसंधान हो रहे हैं। विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान के द्वारा ही वैज्ञानिक बुद्धि का विकास हो सकेगा।

संवेदनषीलता का विकास :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार बालक में प्रकृति और मानव मात्र के प्रति प्रेम को स्थापित करना ही संवेदनशीलता है। इस प्रकार की संवेदनशीलता में घृणा द्वेष, क्रोध और हिंसा का कोई स्थान नहीं है।

सृजनात्मकता का विकास :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार सृजनात्मकता का अर्थ शरीर, मन, आत्मा तीनों की सृजनषीलता से है। बालक में विचारों को लादने से नहीं बल्कि स्वतंत्र एवं सुखद वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए। जिससे बालक में सृजनात्मकता का विकास हो।

पाठ्यचर्या :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार बालक के समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए एक एकीकृत पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार पाठ्यक्रम में पर्यावरण अध्ययन, कला, शिल्प, संगीत, नाटक, तैराकी, खेल, बागवानी, योग आदि जैसी विभिन्न पाठयेत्तर गतिविधियों के समावेश की वकालत की है। उनका मत था कि शिक्षण एक जीवन जीने की कला है। उनके अनुसार पाठ्यक्रम में निम्न सिद्धांतों का समावेश आवश्यक है।

1. स्वतंत्रता का सिद्धांत
2. आत्मज्ञान का सिद्धांत
3. एकीकरण का सिद्धांत
4. सहयोग का सिद्धांत
5. सोच का सिद्धांत

इसके साथ ही नैतिकता, क्रियाशीलता, उद्देश्य युक्त, अधिगम और उपयोगिता के सिद्धांतों को भी पाठ्यक्रम में शामिल करने पर बल दिया है।

शिक्षण विधियाँ :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार विद्यार्थी के संपूर्ण विकास हेतु निम्नलिखित शिक्षण विधियाँ आवश्यक है।

1. व्याख्यान विधि
2. श्रवण विधि
3. मनन विधि
4. स्वाध्याय विधि
5. निदिध्यास विधि
6. अवलोकन विधि
7. वार्तालाप विधि
8. दृष्टान्त विधि
9. प्रयोग विधि

मूल्यांकन प्रणाली :

जे0 कृष्णमूर्ति मूल्यांकन की प्रचलित परंपरा में विश्वास नहीं करते हैं। इस प्रकार की प्रणाली से विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा, महत्वाकांक्षा उत्पन्न होती है। आगे आने की दौड़ में विद्यार्थी के अंदर हताशा, कुन्ठा और भय उत्पन्न होता है। वह शिक्षकों से अपेक्षा करते हैं कि उन्हें इस प्रकार सहायता करें कि विद्यार्थी सतत सीख सके। वर्तमान सम्यक

शिक्षा में परीक्षा प्रणाली और मूल्यांकन प्रणाली के स्थान पर नवीन व्यवस्था पर जोर देते हैं। जहाँ विद्यार्थी का सीखना, प्रज्ञावान होना और सृजनशील होना महत्वपूर्ण है।

शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नूतन प्रयोग और अनुसंधान के प्रति शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक को जागरूक होना चाहिए, जिससे शैक्षिक समस्याओं का समाधान खोजा जा सके। इस प्रकार जे0 कृष्णमूर्ति ने शैक्षिक अनुसंधान और प्रयोगों को सतत प्रोत्साहित किया है। जो आधुनिक भारतीय शिक्षा के लिए उपादेय है।

विद्यालय :

विद्यालय शान्तिपूर्ण वातावरण में स्थापित होना चाहिए। इसके प्रशासन में शिक्षार्थियों की भी भागीदारी होनी चाहिए। विद्यालय में शिक्षक परिषद का निर्माण हो। विद्यालय का निर्माण ऐसे वातावरण में होना चाहिए जहाँ बालक अपनी समस्याओं का समाधान कर सके। छात्र परिषद पर विद्यालय की सफाई व भोजन का कार्य सौपा जाना चाहिए। विद्यार्थी जीवन की समग्रता से सीखना है। इसलिए अकाद्मिक उत्कृष्टता आवश्यक है। कृष्णमूर्ति ने आठ स्कूल स्थापित किए है, जिन्हें 'ऋषि वैली स्कूल' के नाम से जाना जाता है। जिसमें दो विदेशों एवं छः भारत में हैं। इन स्कूलों का उद्देश्य और मिशन बालकों को उत्कृष्ट तकनीकी क्षमता से लैस करना है ताकि वह दक्षता से अपना कार्य कर सकें। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि सही वातावरण बनाना ताकि बालक पूरी तरीके से विकसित हो सके।

अनुशासन :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार अनुशासन का अर्थ सिखाना, अनुरूप होना, दमन करना, प्रतिरूपों की नकल न करना शामिल है। इनकी दृष्टि में बच्चों मे आन्तरिक एवं वाह्य दोनों प्रकार की स्वतंत्रता होनी चाहिए। स्वतंत्रता का अर्थ एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को ध्यान में रखते हुए अपने कार्यों का संपादन करता है। दूसरे के प्रति नम्रता, विवेकशीलता और परिवेश के प्रति सगजता होना आवश्यक है।

शिक्षक :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षक को एकीकृत मानव होना चाहिए। शिक्षक को बालकों से प्रेम पूर्ण व्यवहार करना चाहिए। शिक्षक को धैयवान एवं सीखने में सहायता करनी चाहिए। शिक्षक को छात्रों में सचेतनशीलता एवं उद्यमिता लानी चाहिए। शिक्षक का कार्य विद्यार्थी को समेकित राष्ट्र के लिए उत्तम नागरिक निर्माण करने वाला हो।

विद्यार्थी :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार विद्यार्थी और शिक्षक एक साथ सीखते हैं। इसलिए विद्यार्थियों को बराबर का भागीदार मानना चाहिए। उन्हें अपना अनूठा अस्तित्व विकसित करने हेतु अवसर दिए जाने चाहिए। विद्यार्थी में गुरु के प्रति पूर्ण प्रतिबद्धता होनी चाहिए।

शिक्षक – शिक्षार्थी सम्बन्ध :

जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षक का दायित्व केवल पुस्तके पढ़ाना नहीं है। विषय पढ़ाना प्रथम धर्म है। दूसरा उत्तरदायित्व बालक को शुभ कार्यों को प्रेरणा देने वाला होना चाहिए। तीसरा उत्तरदायित्व अच्छे बुरे की पहचान कराना। शिक्षार्थी का कर्तव्य गुरु को सम्मान देना है। तभी वह विद्या ग्रहण का अधिकारी है। ''श्रद्धावान लभते ज्ञानम्''।

जे0 कृष्णमूर्ति एवं मानववाद :

जे0 कृष्णमूर्ति का मानवतावाद संपूर्ण जागरूकता को एक मानने पर आधारित था। वे मानव मात्र की भलाई के पक्षधर थे। जे0 जे0 कृष्णमूर्ति का मानवतावाद गहरे मानवीय मूल्यों एवं चेतना के उत्थान पर केंद्रित है। वे न केवल व्यक्ति की स्वतंत्रता और आत्म जागरूकता पर बल देते है, बल्कि समाज में व्यापक मानसिक बंधनों, धार्मिक कट्टरता, शिक्षा प्रणाली की सीमाओं, भय और संघर्षों की मुक्ति की बात करते हैं। उनका मानवतावाद किसी बाहरी सुधार पर निर्भर नहीं करता बल्कि आंतरिक परिवर्तन को प्राथमिकता देता है। वे सत्य की खोज पर जोर देते हैं। यह विचारधारा आधुनिक समाज में अत्यंत प्रासंगिक है। आधुनिक विश्व में धर्म को लेकर संघर्ष और कट्टरता बढ़ रही है। उनके अनुसार धर्म का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति को पूर्ण स्वतंत्रता और सत्य की खोज तक पहुंचाना है, न कि किसी विश्वास प्रणाली में बांधना। यह विचार वर्तमान परिपेक्ष्य में उपादेय हैं, क्योंकि इससे धार्मिक सहिष्णुता और आंतरिक शांति को बढ़ावा मिलता है। जे0 कृष्णमूर्ति का दृष्टिकोण हमें प्रकृति के प्रति संवेदनशील होने और भोगवादी प्रवृत्तियों से मुक्त होने की प्रेरणा देता है। उनका मत है कि जब तक मनुष्य लालच और व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर नहीं उठेगा, तब तक कोई भी बाहरी समाधान टिकाऊ नहीं होगा। जे0 कृष्णमूर्ति का प्रेम और करुणा का विचार अहंकार से परे एक गहरे सम्बन्ध की बात करता है। वास्तविक मानवता हेतु व्यक्ति के अंदर करुणा, प्रेम का भाव होना आवश्यक है। समाज में परिवर्तन का आधार व्यक्ति का आत्मपरिवर्तन है। जे0 कृष्णमूर्ति के दार्शनिक दृष्टिकोण में मानवतावाद के चार आधारभूत स्तंभ है।

1. जन्मजात सद्गुण
2. भावात्मक अधिगम
3. आन्तरिक अभिप्रेरणा
4. स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता

जे0 कृष्णमूर्ति का मानवतावादी दृष्टिकोण एक व्यवहारिक मार्गदर्शन है, जो आज की जटिल दुनिया में व्यक्ति को स्वतंत्र, संवेदनशील और बुद्धिमान बनने की प्रेरणा देता है। उनका मानवतावाद पारम्परिक दृष्टिकोण से भिन्न होते हुए भी अत्यन्त प्रासंगिक है, क्योंकि यह हमें आन्तरिक रूपान्तरण, प्रेम, करुणा, जागरूकता और स्वतंत्रता की ओर ले जाता है। जो किसी भी स्वस्थ्य और समृद्ध समाज के लिए अनिवार्य है।

जे0 कृष्णमूर्ति और विश्व शांति :

जे0 कृष्णमूर्ति का विश्व शांति के संदर्भ में अनूठा दृष्टिकोण था। वे मानते थे कि बाहरी शांति केवल तभी सम्भव है, जब व्यक्ति अपने भीतर शांति स्थापित करे। उनके अनुसार जब तक व्यक्ति स्वयं के भीतर संघर्ष, भय और द्वेष से मुक्त नहीं होगा, तब तक बाहरी रूप से शांति स्थापित करना केवल एक भ्रम रहेगा। जे0 कृष्णमूर्ति का मानना था कि समाज में संघर्ष का मूल कारण व्यक्ति की मानसिक स्थिति है। भय, लोभ, अहंकार और सुरक्षा जैसी भावनाएं संघर्ष को जन्म देती हैं। वे कहते हैं कि व्यक्ति जब तक आंतरिक बाधाओं से मुक्त नहीं होगा, तब तक शांति केवल एक आदर्श अवधारणा बनी रहेगी। उनका दृष्टिकोण यह था कि सच्ची शांति बाहरी नहीं बल्कि आंतरिक होती है। जे0 कृष्णमूर्ति राष्ट्रवाद, संगठित धर्म और विचारधारा आधारित पहचान को विश्व शांति के लिए सबसे बड़ी बाधा मानते हैं। उनके अनुसार, जब लोग खुद को किसी विशेष जाति, धर्म देश के आधार पर पहचानते हैं, तो वे दूसरों से अलग महसूस करने लगते हैं। जिससे संघर्ष उत्पन्न होता है। वे कहते हैं कि मनुष्य को केवल 'मनुष्य' के रूप में देखना चाहिए न कि किसी विशेष समूह का हिस्सा।

उनका मानना था कि यदि बच्चों में प्रेम, करुणा, आत्म जागरूकता की शिक्षा दी जाए तो एक शांतिपूर्ण समाज का निर्माण किया जा सकता है। उनका मत था कि भय से लोग आक्रामक और असहिष्णु बनते हैं। उन्होंने लोगों से आह्वाहन किया कि वे अपने भीतर के भय को समझे और उसे समाप्त करें। जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार प्रेम और करुणा ही सच्ची शांति का आधार है। जब व्यक्ति में सच्चा प्रेम होगा तो अहंकार और अपेक्षाओं से मुक्त होगा। तभी वह दूसरों के प्रति हिंसा नहीं करेगा।

जे0 कृष्णमूर्ति का विश्व शांति के प्रति दृष्टिकोण पारंपरिक से अलग और गहरे स्तर पर कार्य करने वाला था। उनका मत है कि मानव संघर्ष का मूल कारण व्यक्ति के मन में मौजूद भय, लालच और अहंकार है। जब तक व्यक्ति स्वयं को नहीं समझेगा और अपने भीतर करुणा और सह अस्तित्व की भावना विकसित नहीं करेगा तब तक समाज में वास्तविक शांति नहीं आ सकती।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में जे0 कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन के प्रतिबिम्ब

जे0 कृष्णमूर्ति अनुभवात्मक अधिगम पर जोर देते हैं, क्योंकि व्यवहारिक सत्र बच्चों को गंभीर एवं रचनात्मक रूप से सोचने, पूछताछ करने, खोजने, चर्चा करने, बातचीत करने और समस्या का विश्लेषण करने के लिए प्रेरित करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस सम्बन्ध में जे0 कृष्णमूर्ति के दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित करती है। शिक्षण और सीखने

को अधिक संवादात्मक तरीके से संचालित किया जाएगा। प्रश्नों को प्रोत्साहित किया जाएगा और छात्रों के लिए गहन और अधिक अनुभवात्मक सीखने के लिए कक्षा सत्र नियमित रूप से आयोजित किए जाएंगे। 'अधिक मजेदार रचनात्मक, सहयोगी और खोजपूर्ण गतिविधियाँ' राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)

जे0 कृष्णमूर्ति ने पाठ्यक्रम को एकीकृत करने पर जोर दिया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) भी एक एकीकृत या अन्तर–पाठ्यचर्या की बात करती है। जे0 कृष्णमूर्ति प्रकृति को महत्व देते हैं, जिसका हम सब हिस्सा हैं। उन्होंने प्रकृ ति पक्षियों, जानवरों आदि के संरक्षण और प्रकृति के प्रति संवेदनशील और सम्मान पूर्ण होने के लिए प्रकृति के साथ समय बिताने की वकालत की है। अब नीति निर्माताओं ने भी इसके महत्व को महसूस किया है। जैविक खेती और पर्यावरण शिक्षा को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) भी पाठ्यक्रम में शामिल करने की बात करती है। जे0 कृष्णमूर्ति एक निडर और उत्तेजक सीखने के माहौल के प्रबल पक्षधर थे। ऐसा वातावरण छात्रों को विभिन्न जीवन कौशल और सामाजिक कौशल विकसित करने के लिए उचित गति प्रदान करता है। महत्वपूर्ण सोच, संचार, सहयोग, रचनात्मकता, आत्म–पहल, आत्म–अनुशासन, टीमवर्क, जिम्मेदारी, नागरिकता आदि और इसलिए उन्हें समग्र रूप से फलने–फूलने दें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) भी शिक्षण संस्थानों में सीखने के लिए सुरक्षित और उत्तेजक माहौल को आवश्यक मानती है।

जे0 कृष्णमूर्ति स्कूलों में गैर प्रतिस्पर्धी माहौल बनाए रखने के प्रबल पक्षधर थे। क्योंकि हर बालक अद्वितीय होता है और उसकी विशिष्टता को पहचानना और बढ़ावा दिया जाना चाहिए। प्रतियोगिता इसकी विशिष्टता को नष्ट कर देगी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) एक गैर प्रतिस्पर्धी संस्कृति को विकसित करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) भी प्रत्येक छात्र की अद्वितीय क्षमताओं को पहचानने और बढ़ावा देने तथा प्रत्येक छात्र के समग्र विकास पर बल देती है।

जे0 कृष्णमूर्ति मात्रात्मक मूल्यांकन प्रणाली के खिलाफ थे। क्योंकि मात्रात्मक मूल्यांकन प्रणाली बालक के स्मृति के आधार को मानकर आकलन करती है। उन्होंने गुणात्मक मूल्यांकन प्रणाली का समर्थन किया। क्योंकि यह दैनिक आधार पर किया जाता है। यह देखना अच्छा है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में मूल्यांकन की प्रकृति को बदलकर ऐसी शिक्षा प्रणाली को विकसित करने पर बल दिया है, जो अधिक समावेशी और शिक्षार्थी केन्द्रित हो।

निष्कर्ष :

शिक्षा दर्शन, शिक्षा मनोविज्ञान, मानवतावाद एवं विश्व शांति के परिपेक्ष्य में जे0 कृष्णमूर्ति का मनोदर्शन का योगदान समस्त मानव समाज के लिए उपयोगी एवं सार्थक है। जे0 कृष्णमूर्ति ने समाज में एक समावेशी दृष्टिकोण उत्पन्न किया है। वे एक भयमुक्त समाज का निर्माण करना चाहते थे। मानवीय गुणों को विकसित कर समग्र विकास पर बल दिया है। विद्यार्थी में समस्त अन्तर्निहित शक्तियों को विकसित करने का प्रयास किया। उन्होंने विद्यार्थियों में आत्मबोध उत्पन्न करने की वकालत की है। शिक्षा के उद्देश्य में सत्य की खोज, शाश्वत मूल्यों पर बल, आत्मबोध,

प्रज्ञा जागरण, इन्द्रियानुभूति, प्रत्यक्ष ज्ञान पर बल दिया है। उनका संदेश अपने भीतर देखो, स्वयं को जानो और स्वतंत्र बनों। हमें सोच और चेतन की गहराई से समझने के लिए आमंत्रित करती है। विद्यार्थियों में सृजनात्मक शक्ति एवं चिन्तनशील ज्ञानार्जन शक्ति के विकास पर बल दिया है। पाठ्यक्रम में व्यक्ति को स्वयं अपने जीविकोपार्जन की क्षमता विकसित करने की बात की गई है। जे0 कृष्णमूर्ति सहशिक्षा देने के पक्षधर थे। शिक्षा के क्षेत्र में आनुभाविक एवं प्रायोगिक कार्यो पर बल दिया है। अतएव उनके दर्शन से समाज को अतुल्यनीय सहयोग मिला है, जो प्रशंसनीय है। शिक्षा दर्शन की विभिन्न विचारधाराओं के परिपेक्ष्य में जे0 कृष्णमूर्ति की शैक्षिक परिदृष्टि सम्यक रूप से अभिव्यक्त हुई है। जे0 कृष्णमूर्ति की समग्र जीवन दृष्टि में मानवतावाद एवं विश्व शांति को महत्व दिया गया है। उन्होंने व्यक्तिगत जागरूकता, आत्मनिरीक्षण और मन की स्वतंत्रता पर जोर दिया है। जिससे व्यक्ति स्वयं में बदलाव लाकर समाज एवं विश्व में शांति स्थापित कर सकता है। जे0 कृष्णमूर्ति के शिक्षा दर्शन का प्रतिबिम्बन राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में भी दिखाई दे रहा है। जे0 कृष्णमूर्ति ने शैक्षिक अनुसंधानों और प्रयोगों को सतत प्रोत्साहित किया है। उनके दृष्टिकोण में सीखने की विधि का विचार ही व्यक्ति को ज्ञान प्राप्त करने में मदद करता है। उनकी सम्यक दृष्टि मानवतावाद को नई दिशा प्रदान कर रही है। उनकी दृष्टि एक देशीय न होकर सार्वभौमिक है। जे0 कृष्णमूर्ति अंतर्राष्ट्रीयता और अन्तर सांस्कृतिक भावना को शिक्षा द्वारा स्थापित करना चाहते है, जो विश्व शांति की आधारशिला है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

- कृष्णमूर्ति जे0 (2001) युद्ध और शान्ति, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी।
- कृष्णमूर्ति जे0 (2003) अन्तिम वार्ताएं, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी।
- कृष्णमूर्ति जे0 (2004) फ्रीडम का अर्थ क्या होता है ? कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, चेन्नई।
- कृष्णमूर्ति जे0 (2004) ध्यान, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी।
- कृष्णमूर्ति जे0 (2004) मानवता का भविष्य, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी।
- कृष्णमूर्ति जे0 (2007) जीवन आगे। कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, चेन्नई।
- कृष्णमूर्ति जे0 (2008) शिक्षा क्या है ? कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी।
- कृष्णमूर्ति जे0 (2010) शिक्षा और जीवन का महत्व, कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, चेन्नई।

पत्र पत्रिकाएं :

- परिसंवाद अंक (जुलाई – सितम्बर 2005) कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी।
- भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका रजत जयन्ती विशेषांक (जुलाई – सितम्बर 2007) कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी।
- परिसंवाद अंक (सितम्बर 2007) कृष्णमूर्ति फाउण्डेशन इण्डिया, वाराणसी।